Q:- सिंधु घाटी के निवासियों की आर्थिक ~~संस्कृति~~ दशा पर एक संक्षिप्त लेख प्रस्तुत करें।

उत्तर:- प्राचीन काल में भारत वर्ष को सोने की चिड़िया के नाम से संबोधित किया जाता था। सोने की चिड़िया से तात्पर्य हमारे देश की आर्थिक संपन्नता से था। धन वैभव से परिपूर्ण हमारे देश पर विदेशियों की आँखें लगी रहती थी। यही कारण है कि प्राचीनकाल में सिकन्दर महान, मध्य काल में महमूद गजनवी, नादिरशाह एवं तैमूरलंग तथा आधुनिक युग के डच, फ्रांसीसी एवं अंग्रेजों ने हमारे देश पर या तो आक्रमण करके या व्यापार के माध्यम से हमारे सोने की चिड़ियाँ को उड़ाकर अपने यहाँ ले गया। इस तरह भारत की आर्थिक संस्कृति की बुनियाद

हमारे सैन्धव घाटी के आर्यों ने तैयार की थी। हम सैन्धव सभ्यता के विभिन्न आर्थिक पहलुओं का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत कर सकते हैं :-

• **उन्नत कृषि :-** सिन्धु घाटी सभ्यता की आर्थिक संस्कृति का पृष्ठाधार तैयार करने में कृषि ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया। सैन्धव सभ्यता के लोगों के जीवकोपार्जन का सर्वप्रमुख साधन कृषि था जिसका स्थान कालान्तर में वाणिज्य एवं व्यवसाय के क्रमिक विकास ने ले लिया। अधिकांश लोग कृषि कार्य में ही लगे हुए थे। खेतों की उर्वरता एवं सिंचाई का समुन्नत प्रबन्ध होने के कारण पैदावार अच्छी होती थी। अनुमानतः बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों मे बाढ़ आने से पहले ही मुख्य

फसल उगाकर काट लिए जाते होंगे। पुनः बाढ़ का पानी हटने के बाद शीघ्र फसल बो दिया जाता होगा। प्रायः सिन्धु घाटी के किसान हर प्रकार के अनाज का उत्पादन करते होंगे किंतु यह उल्लेखनीय है कि उन दिनों भारतीय भूमि पर जौ और गेंहू का सर्वाधिक उत्पादन होता था। लोग अनाज के अतिरिक्त विभिन्न तरह के फल, दाल एवं सब्जियां भी उपजाते थे। सम्भवतः कपास का उत्पादन सर्वप्रथम यहीं के लोगों ने शुरू किया इस तरह हम देखते हैं कि सिन्धु घाटी सभ्यता में कृषि उन्नतावस्था में थी।

• **पशुपालन :-** सैन्धव घाटी में आर्थिक दृष्टिकोण से पशुपालन का बड़ा महत्व था। उनके पालतू

पशुओं में भैंस, बैल, सुअर, गाय, भेड़, हाथी, ऊँट, बकरी, कुत्ता आदि प्रमुख थे। ये जानवर किसी न किसी रूप में उनके जीवकोपयोगी थे। सिन्धु घाटी के लोग बिल्ली, नेवला, बन्दर, खरगोश, मोर, तोता, गिलहरी, मुर्गी, हिरण आदि से परिचित थे। पशुओं का शिकार कर आदि मानव की भाँति वे अपनी क्षुधा तृप्ति भी करते थे। किन्तु आदिमानव की भाँति वे मांस को कच्चा न खाकर उसे आग में भुनकर खाना पसन्द करते थे। वे लोग चीता, गैंडा, शेर, रीछ आदि जैसे कई जंगली जानवरों से भी परिचित थे। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता में कृषि की उन्नति के कारण पशुपालन भी बड़े पैमाने पर होता था।

• **वाणिज्य एवं व्यवसाय की**

उन्नति :- कृषि की भाँति सिन्धु सभ्यता के निवासियों ने वाणिज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व प्रगति कर ली थी। यहाँ के व्यापारी मालों को बड़े-बड़े गोदामों में संचित कर उसे बाज़ार में भेजते थे। आधुनिक भारत के कस्बों में लगने वाले हाटों की भाँति वहाँ प्रतिदिन अस्थायी बाजार लगते थे। वहाँ की आर्थिक सम्पन्नता को देखने से इस बात का सहज ही अन्दाजा लगाया जा सकता है कि यहाँ प्रचुर मात्रा में अनाज का उत्पादन होने के कारण यहाँ के व्यापारीगण इन्हें देशों में इसका निर्यात करते होंगे।

उद्योग-धन्धों की प्रगति :- वाणिज्य एवं व्यापार की भाँति सैन्धव सभ्यता के नागरिकों ने विभिन्न उद्योग-धन्धों के क्षेत्र में भी प्रशंसनीय प्रगति की थी। कपास से वस्त्र यहीं तैयार किया गया। वहाँ सूती वस्त्रों के

Scanned with CamScanner

अतिरिक्त ऊनी एवं रेशमी वस्त्रों का उत्पादन होता था। सिंधु घाटी में कई शिल्प कलाएँ भी विकसित थीं। अनाज या अन्य चीजों को सुरक्षित रखने के लिए कुम्भकार मिट्टी के विशाल बर्तन भी बनाते थे। कुछ लोग मछली मारकर एवं आखेट के द्वारा भी अपनी जीविका चलाते थे। हाथी दाँत का काम करने वाले भी कुछ उद्यमी थे।

निष्कर्ष :- सैन्धव सभ्यता के लोगों का आर्थिक जीवन सुखमय एवं संतोषप्रद था। जनसाधारण भी अपने - अपने पेशों के द्वारा सुख एवं शांति का जीवन व्यतीत करते थे। विश्व के अन्य भू - भागों के निवासियों की तुलना में सिन्धुघाटी के लोग आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न थे। सैन्धव सभ्यता का साधारण नागरिक सुविधा तथा विलास का जिस मात्रा में उपयोग करता था, उसकी तुलना उस समय के समग्र संसार के दूसरे भागों से नहीं की जा सकती थी।

Scanned with CamScanner